1. पाटलिपुत्र नगर के वैभव का वर्णन करें।

अथवा, 'पाटलिपुत्र वैभवम्' पाठ के आधार पर पटना के वैभव का वर्णन पाँच वाक्यों में करें। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलिपुत्र की रक्षा व्यवस्था कैसी थी ?

उत्तर–पाटलिपुत्र प्राचीनकाल से ही अपनी वैभव परम्परा के लिए विख्यात रही है। विदेशी यात्री ने संस्मरणों में यहाँ की अनेक उत्कृष्ट सम्पदाओं का वर्णन किया है। मेगास्थनीज ने लिखा है कि चन्द्रगुप्तमौर्य काल में यहाँ की शोभा और रक्षा व्यवस्था अति उत्कृष्ट थी। अशोक काल में यहाँ निरन्तर समृद्धि रही। कवि राजशेखर ने अपनी रचना काव्यमीमांसा में ऐसी ही बात लिखी है। यहाँ बड़े-बड़े कवि-वैयाकरण भाष्यकार (परीक्षित) हुए।

आज पाटलिपुत्र नगर 'पटना' के नाम से जाना जाता है। जहाँ संग्रहालय, गोलघर, जैविक उद्यान इत्यादि दर्शनीय स्थल हैं। इस प्रकार पाटलिपुत्र प्राचीनकाल से आज तक विभिन्न क्षेत्रों में वैभव धारण करता है। इसका संकलित रूप संग्रहालय में देखने योग्य है।

2. कौन-कौन से विदेशी यात्री पटना आये थे?

उत्तर-पाटलिपुत्र में आने वाले विदेशी यात्रियों में यूनान के मेगास्थनीज एवं चीन के फाह्यान नामक यात्री का उल्लेख प्राप्त है। इनके संस्मरण ग्रंथों में पाटलिपुत्र का उल्लेख हुआ है।

3. चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलिपुत्र की रक्षा व्यवस्था कैसी थी?

उत्तर-यूनानी यात्री मेगास्थनीज चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पाटलिपुत्र आया था। अपने संस्मरण ग्रंथ (इण्डिका) में उसने उल्लेख किया है कि पाटलिपुत्र की रक्षा-व्यवस्था अत्यंत उत्तम थी।

4. राजशेखर ने पटना का उल्लेख किसी रूप में किया है?

उत्तर-काव्यमीमांसाकार राजशेखर ने पाटलिपुत्र को विद्या की देवी सरस्वती की प्राचीन परंपरा वाला क्षेत्र स्वीकार किया है एवं शिक्षा शास्त्रियों की महान् परंपरा वाला प्रदेश घोषित किया है जहाँ उपवर्ष, वर्ष, पाणिनि, पिङ्गल, वररुचि एवं पतञ्जलि जैसे दिग्गज विद्वानों ने अपना कार्य किया।

5. पटना के प्रमुख दर्शनीय स्थलों का उल्लेख करें।

उत्तर-बिहार की राजधानी पटना के दर्शनीय स्थलों में गाँधी सेतु, संग्रहालय, उच्च न्यायालय, सचिवालय, गोलघर, तारामण्डल, जैविक उद्यान, मौर्यकालीन अवशेष तथा महावीर मंदिर विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त सिक्ख धर्म के दसवें गुरु गोविन्द सिंह का जन्म स्थल 'गुरुद्वारा' भी विशिष्ट स्थान है जहाँ संपूर्ण विश्व के सिक्ख समुदाय के लोग दर्शन करने आते हैं।

6. किन-किन विदेशी यात्रियों ने अपने संस्मरण ग्रंथों में पटना का वर्णन किया है?

उत्तर-मेगास्थनीज, फाह्यान, हेवनसांग, इत्सिंग आदि विदेशी यात्रियों ने अपने -संस्मरण ग्रंथों में पटना का वर्णन किया है।

7. पाटलिग्राम के संबंध में भगवान् बुद्ध ने क्या कहा था?

उत्तर-भगवान बुद्ध ने पाटलिग्राम के संबंध में कहा था कि यह गाँव महानगर होगा किन्तु आपसी झगड़ा, आगलगी और बाढ़ के भय से सदैव पीड़ित होगा।

8. पाटलिपुत्र की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर-बिहार राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र एक प्राचीन नगर है। इसका इतिहास 2500 वर्ष पुराना है। यह राजनीतिक क्षेत्र, क्षेत्र, उद्योग क्षेत्र एवं धार्मिक क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ मेगास्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग आदि विद्वान् का आगमन हुआ था। इसका प्राचीन नाम पाटलिग्राम था जहाँ भगवान् बुद्ध आये थे। इस प्रकार यह नगर सदा अपने स्वर्णिम वैभव के लिए प्रसिद्ध रहा है।

9. पाटलिपुत्र का पुष्पपुर या कुसुमपुर नाम का उल्लेख कहाँ है?

उत्तर-प्राचीन संस्कृत ग्रंथों और पुराणों में पाटलिपुत्र का नाम पुष्पपुर या कुसुमपुर का उल्लेख किया गया है।

10. महान् लोग संसाररूपी सागर को कैसे पार करते हैं?

उत्तर–महान लोग अपने को अज्ञानी तथा अन्य विद्वान को ज्ञानी समझकर संसार रूपी सागर से पार कर जाते हैं। अर्थात् महान व्यक्ति अपने नाम को छोड़कर उस दिव्य श्रेष्ठ पुरुष (ब्रह्म) को प्राप्त कर लेता है।

11. प्राचीन ग्रन्थों में पटना के कौन-कौन से नाम मिलते हैं?

उत्तर – पटना में गुप्तवंश के शासन काल में कौमुदी महोत्सव मनाया जाता था। यह उत्सव शरत् काल में मनाया जाता था। कौमुदी महोत्सव में सभी लोग उत्साहपूर्वक भाग लेते थे एवं आनंदमय होते थे।

12. अलसकथा' पाठ में किसका वर्णन है?

उत्तर-मैथिल कवि विद्यापति ने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रंथ लिखा है जिससे उद्धृत 'अलस कथा' में आलस्य के निवारण की प्रेरणा और इस संसार की लोक नीतियों और अनेक पक्षों पर व्यंग्यात्मक दृष्टि डाली गयी है। मिथिला राज्य के मंत्री वीरेश्वर करुणा कर आलसियों के लिए अलसशाला का निर्माण करवाता है ताकि वे भी भोजन वस्त्रादि प्राप्त कर सकें। परंतु इसका फायदा धूर्त और कम आलसी लोग भी उठाने लगते हैं। अधिक व्यय होने पर अधिकारियों ने अलसशाला में आग लगवा दिया ताकि सच्चे आलसी की पहचान हो सके। धूर्तों और कम आलसियों के भागने पर केवल चार आलसी ही बचे रह जाते हैं जिन्हें केशों से खींचकर निकाला जाता है और यथेष्ठ दानादि देकर विदा किया जाता है।

13. 'अलसशाला' के कर्मियों ने आलसियों की परीक्षा क्यों ली?

उत्तर-अलसशाला में आलसियों की सुख-सुविधाओं को देखकर कम आलसी एवं कृत्रिम आलसियों की भीड़ जुट गई थी जिससे अलसशाला का खर्च बेवजह बढ़ गया था। अत: अलसशाला के व्यर्थ खर्च को रोकने तथा सही आलसियों की पहचान के लिए अलसशाला के कर्मचारियों ने आलसियों की परीक्षा ली। इस परीक्षा से उन्होंने सही आलसियों को चुन निकाला।

14. मंत्री वीरेश्वर की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर-मंत्री वीरेश्वर मिथिला के मंत्री थे। वे स्वभाव से दानशील और दयावान था। वे दीन-दु:खियों और अनाथों को प्रतिदिन अन्न, वस्त्र और भोजन दिलाते थे।

15. चारों आलसियों का सम्वाद अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- अलसशाला में आग लगने पर भी चार आलसी लोग भागने के बजाए परस्पर वार्तालाप कर रहे थे। एक ने कपड़े से मुख ढक कर कहा-अरे कोलाहल कैसा? दूसरे ने कहा लगता है कि इस घर में आग लग गई है। तीसरे ने कहा-कोई भी ऐसा धार्मिक नहीं है जो इस समय पानी से भींगे वस्त्रों से या चटाई से हमलोगों को ढंक दें। चौथे ने कहा- अरे वाचालों कितनी बातें करोगें?

16. अलसशाला के कर्मियों ने आलसियों को आग से कैसे और क्यों निकाला?

उत्तर- अलसशाला में आलसियों को आग से जलकर मर जाने के भय से चारों आलसियों को बाल पकड़कर खींचते हुए बाहर निकाला।

17. 'अलसकथा' पाठ में वास्तविक आलसियों की पहचान कैसे हुई?

उत्तर-आलसी लोगों के सुख को देखकर धूर्त्त लोग भी छल से भोजन प्राप्त करने लगे। धूर्त्त लोगों की पहचान के लिए सोये हुए आलसियों के घर में आग लगा दी, धूर्त्त लोग घर में आग देखकर भाग गये।

18. संस्कृत साहित्य के संवर्धन में महिलाओं के योगदान का वर्णन करें।

उत्तर–'संस्कृतसाहित्ये लेखिकाः' पाठ में लेखक का विचार है कि प्राचीन काल से लेकर आजतक महिलाओं ने संस्कृतसाहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। दक्षिण भारत की महान साहित्यकार महिलाओं ने भी संस्कृतसाहित्य को समृद्ध बनाया। / इससे स्पष्ट है कि लेखक के विचार में महिलाओं का संस्कृतसाहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान है।

19. संस्कृत में पण्डिता क्षमाराव के योगदान का वर्णन करें।

उत्तर–आधुनिक काल में लेखिकाओं में पण्डिता क्षमाराव का नाम प्रसिद्ध है। उनके द्वारा अपने पिता शंकर पाण्डुरंग के महान विद्वता का जीवन चरित (शङ्कर रचित) को पूरा किया।
गाँधी-दर्शन से प्रभावित होकर उन्होंने सत्याग्रहगीता, मीरा लहरी, कथामुक्तावली, विचित्र परिषद्यामा, तथा ग्रामज्योति जैसे अनेक ग्रन्थों को लिखा। ये सभी लेखन इनके उदारपूर्ण योगदान का परिचायक हैं।

20. भारत महिमा पाठ के आधार पर भारत भूमि कैसी है? अथवा, भारतीय लोगों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता क्या है?

उत्तर–भारत भूमि पुत्रवत्सला है। यहाँ की नदियाँ पवित्र हैं। यहाँ विभिन्न धर्म, जाति एवं भाषा के लोग आपसी मेल-जोल से रहते हैं। भारत का वातावरण शांत एवं उल्लासमयी है। यहाँ गंगा जमुना तरजीव है। अनेकता में एकता इसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता है।

21. भारतभूमि कैसी है और यहाँ कौन लोग रहते हैं?

उत्तर-भारत भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है जहाँ देवता भी जन्म लेकर स्वयं को धन्य मानते हैं। संपूर्ण देश में अनेकता में एकता का दर्शन होता है। इस देश के लोग आपसी वैर-भाव को भूलाकर एकत्व भाव से मिल जूलकर रहते हैं। सही ही कहा गया है- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भारत भूमि पर ही लक्षित है।

22. 'भारतमहिमा' पाठ के आधार पर हमारी मातृभूमि कैसी है?

उत्तर-सागरों, पर्वतों, नदियों, जंगलों तथा झरनों से सुशोभित हमारी मातृभूमि है। यह हिमालय से कन्याकुमारी तक फैली है। यहाँ विभिन्न जाति, धर्म-सम्प्रदाय के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ के लोग शत्रुओं से भी मित्रवत् व्यवहार करते हैं। यहाँ के लोग देश की गौरव की रक्षा के लिए तन-मन-धन से समर्पित होने के लिए तत्पर रहते हैं।

23. पठित पाठ के आधार पर भारतवर्ष की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर-हमारी जन्मभूमि भारत निर्मल, वत्सल और विशाल है। इसके चरणों को सदा सागर पखारती रहती है। वन, पर्वत, नदी और झरनों से सुशोभित इस धराधाम में अनेक जाति तथा धर्म के लोग एक भारतीय के रूप में प्रेमपूर्वक निवास करते हैं। देवगण भी इस भारत भूमि पर अवतार लेने को ललायित रहते हैं।

24. समावर्त्तन संस्कार का वर्णन करें।

उत्तर- समावर्तन संस्कार में शिष्य का गुरु के घर से गृहस्थ जीवन में प्रवेश है। शिक्षा के अन्त होने पर गुरु शिष्यों को उपदेश देकर घर भेजते हैं। उपदेशों में प्राय: जीवन के कर्त्तव्यों का प्रतिपादन किया जाता है। जैसे-सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय से भागो मत आदि।

25. उपनयन संस्कार का वर्णन करें।

उत्तर-उपनयन संस्कार का अर्थ गुरु द्वारा शिष्य को अपने घर ले जाना होता है। वहाँ शिष्य शिक्षा के नियमों का पालन करते हुए अध्ययन करता है। वे नियम ब्रह्मचर्य व्रत में शामिल है। प्राचीन काल में शिष्य ब्रह्मचारी कहा जाता था। गुरु के घर पर ही शिष्य वेद का अध्ययन करता था। प्राचीन शिक्षा में वेदों का अत्यधिक महत्व था।

26. संस्कार का मौलिक अर्थ क्या है?

उत्तर-संस्कार का मौलिक अर्थ शुद्धीकरण अर्थात् परिष्कार और गुणों का ग्रहण। अत: संस्कार मानवों के शुद्धीकरण में, दोषों को दूर करने में तथा गुणों को ग्रहण करने में योगदान करते हैं। संस्कार संस्कृति का उपकरण है जो व्यक्तित्व की रचना करता है।

27. शैशव संस्कारों का उल्लेख करें।

उत्तर-बचपन के शैशव संस्कार छ: है- जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध।

28. संस्कार का मूल अर्थ क्या है?

उत्तर- संस्कार का मूल अर्थ शुद्ध होना और गुणों का ग्रहण करना तथा रूप को नहीं भूलना है। इसलिए सभी संस्कार मानव के क्रम को शुद्ध करने में दोषों को दूर करने में और गुणों को ग्रहण करने में योगदान करता है।

29. केशान्त संस्कार को गोदान संस्कार भी कहा जाता है, क्यों?

उत्तर-केशान्त संस्कार में गुरु गृह में ही शिष्य का प्रथम झौरकर्म होता था। इसमें गोदान मुख्य कर्म होता था। अतः साहित्य ग्रंथों में इसका दूसरा नाम गोदान संस्कार भी कहा जाता है।

30. विवाह संस्कार में होने वाले कर्मकांडों के बारे में लिखें।

उत्तर-विवाह एक पवित्र संस्कार है, जिसमें अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड होते हैं। उनमें वाग्दान, मण्डप-निर्माण, वरपक्ष का स्वागत, वर-वधू का परस्पर निरीक्षण, कन्यादान, अग्नि-स्थापन, पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी, सिन्दुरदान आदि।

31. 'भारतीय संस्काराः' पाठ के आधार पर बताएं कि संस्कार कितने हैं तथा जन्म-पूर्व संस्कारों का नाम लिखें।

उत्तर- संस्कार मानव जीवन में गुणों का आधान और दोषों का निवारण करता है। भारतीय जीवन के कुल 16 संस्कार हैं- गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोपनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, अक्षरारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि । जन्म से पूर्व संस्कार हैं जो निम्न है; गर्भाधान, पुंसवन तथा सीमन्तोपनयन।

32. शिक्षा संस्कारों का वर्णन करें। अथवा, शिक्षा संस्कार में कौन-कौन संस्कार होते हैं?

उत्तर-शिक्षा संस्कारों में अक्षरारंभ, उपनयन, वेदारंभ, मुण्डनसंस्कार और समापवर्तनसंस्कार आते हैं, अक्षरारंभ में बच्चा अक्षर ज्ञान सीखता है। उपनयनसंस्कार में गुरु के द्वारा शिष्य को अपने घर में लाना होता है। शिष्य शिक्षा के नियमों का पालन करते हुए अध्ययन करते हैं। वहीं शिष्य वेद पढ़ना शुरू करता है।
मुण्डन-संस्कार गुरु के घर में किया जाता था। समापवर्तनसंस्कार का उद्देश्य शिष्य का गुरु के घर से गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना होता था।

33. संस्कार कितने होते हैं? विवाह संस्कार का वर्णन करें।
अथवा, 'भारतीयसंस्कारा: पाठ के आधार स्पष्ट करें कि संस्कार कितने हैं? विवाह संस्कार का वर्णन करें।

उत्तर - संस्कार सोलह हैं। विवाह संस्कार के उपरांत ही मनुष्य वस्तुत: गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है। विवाह पवित्र संस्कार है जहाँ विविध विधान कर्मकाण्ड होते हैं। उनमें वाग्दान (वचनबद्धता), मण्डप निर्माण (मँडवा), वधू के घर पर वरपक्ष को स्वागत, वर-वधू का परस्पर निरीक्षण, कन्यादान, अग्निस्थापना, पाणिग्रहण (हाथ देना), लाजाहोम (धान के लावे से हवन), सप्तपदी (सात वचनों से फेरे), सिन्दूरदान इत्यादि। सभी जगह प्राय: विवाह-संस्कार का आयोजन होता है। तदनन्तर गर्भाधान इत्यादि संस्कार पुनरावृत्त होकर जीवनक्रम घूमता है। मरण के अनन्तर अन्त्येष्टि संस्कार अनुष्ठित होता है। इस प्रकार भारतीय दर्शन का महत्त्वपूर्ण स्रोत स्वरूप संस्कार है।

34. उपनिषद् में किसका वर्णन है?

उत्तर- यह वैदिक वाङ्मय का अभिन्न अंग है। उपनिषद् में दर्शनसिद्धांतों का वर्णन है। सभी जगह परमात्मा का गुणगान किया गया है। इसमें उन्हें सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप और हमेशा विद्यमान रहने वाला कहा गया है। परमात्मा के द्वारा ही संसार व्याप्त और अनुशंसित है। सत्य की पराकाष्ठा ही ईश्वर का मूर्तरूप है। ईश्वर ही सभी तपस्याओं का परम लक्ष्य है।

35. आत्मा का स्वरूप कैसा है? यह कहाँ रहती है?

उत्तर- आत्मा का स्वरूप सूक्ष्म से सूक्ष्मतर तथा विशाल से विशालतरं है। कर्त्तव्य कर्मों के बंधन से मुक्त मनुष्य शोकरहित होकर ब्रह्मा की कृपा से आत्मा की महिमा को देखता है। यह आत्मा मनुष्य के हृदयरूपी गुफा में बंद रहती है।

36. 'मङ्गलम्' पाठ का पाँच वाक्यों में वर्णन करें।

उत्तर- वैदिक वाङ्मय के अंतिम भाग में उपनिषदों का स्थान आता है जिसमें जीवन-दर्शन के सिद्धांतों का निरूपण किया गया है। आत्मा और प्रकृति के संयोग से इस जगत् की उत्पति हुई है। परम ज्ञान की प्राप्ति ही इस जीवन का लक्ष्य है। सत्य के स्वरूप का

चिंतन, आत्मा की विशेषता, सत्यमेव जयते, विद्वान् पुरुष का दिव्यलोकगमन तथा परम ज्ञान पाकर मृत्यु को वश में करना आदि इस पाठ के मुख्य वर्णविषय हैं। उपनिषदों में आदर्श जीवनशैली का वर्णन किया गया है।

37. अपनी प्रगति चाहने वाले को क्या करना चाहिए?

उत्तर-नीतिश्लोका: पाठ के प्रणेता भर्तृहरि ने अपने नीति के अन्यतम पद्यों में से एक में यह कहा है कि इस संसार में जिसे ऐश्वर्यशाली बनना है, सारी विभूतियों का स्वामी बनना है तो इसके निमित उसे निद्रा, तन्द्रा, आलस, क्रोध, भय और दीर्घसूत्रता का त्याग करना होगा अन्यथा उसका लक्ष्य प्राप्ति असंभव हो जाएगा।

38. पंडित किसे कहा गया है?

उत्तर- आचार्य भर्तृहरि ने नीतिशतक में पण्डित जनों की पहचान बताते हुए कहा है कि जिसके कार्य शीत, उष्ण, भय, रति (प्रेम) समृद्धि, असमृद्धि (गरीबी) में नहीं रूकते अर्थात् व्यवधानवश गतिहीन नहीं होते वैसे मानव को पण्डित कहा जा सकता है। साथ ही तत्त्वों को जाननेवाला, सभी प्राणियों के योग क्षेम को जानकर

उसके निमित्त कार्य करना भी मानव को पण्डित कहे जाने योग्य बनाता है

39. मन्दाकिनी का कैसा जल श्रीरामचन्द्रजी के मन को आकर्षित कर रहा है? अथवा, किस कारण से मंदाकिनी का जल कलुषित हो गया था?

उत्तर- प्राकृतिक सुषमा से भरपूर मन्दाकिनी नदी का जल मृग समूहों के द्वारा पीने से गंदा होने पर भी श्रीरामचन्द्रजी के मन को आकर्षित कर रहा है। मंदाकिनी नदी का जल रंग-बिरंगे फूलों से सेवित है। मणि की तरह चमकता हुआ बालू से युक्त रमणीय घाट भी श्रीरामचन्द्रजी के मन को आनंदित कर रहे हैं।

40. कैसे ऋषिगण मन्दाकिनी में स्नान कर रहे हैं?

उत्तर- जटा और मृगचर्म धारण करनेवाले, वृक्ष के छाल को वस्त्र के रूप में धारण करने वाले ऋषिगण मंदाकिनी के जल में स्नान कर रहे हैं।

41. 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ का वर्ण्य विषय क्या है?

उत्तर- 'मन्दाकिनीवर्णनम्' पाठ रामायण के आयोध्याकाण्ड की सर्ग 95 से संकलित है। इसके रचयिता वाल्मीकि हैं। इस पाठ में चित्रकूट के निकट बहनेवाली मन्दाकिनी नामक नदी का वर्णन है। आदिकवि वाल्मीकि की काव्यशैली तथा वर्णक्षमता अभिव्यक्त हुई है। श्रीराम सीता को मन्दाकिनी का वर्णन सुनाते हैं।

42.नीतिश्लोका: के आधार पर मूढचेता नराधम के लक्षण लिखें।

उत्तर – बिना बोले प्रवेश करने वाला बिना पूछे बहुत बोलने वाला, अविश्वासी व्यक्ति नराधम है। ऐसे नराधम से सदा दूरी बनाकर रखनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति धोखेबाज हो सकता है।

43. रामप्रवेश राम की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर-रामप्रवेश राम की शिक्षा प्राथमिक विद्यालय से महाविद्यालय तक हुई। अपने लगन एवं परिश्रम से स्नातक की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। भारतीय लोक सेवा आयोग की परीक्षा में सफल हुआ।

44. राम प्रवेश राम के महाविद्यालयीय शिक्षा के बारे में लिखें।

उत्तर-रामप्रवेशराम जब महाविद्यालय में प्रवेश किया तो वहाँ के पुस्तकालय में स्थित अनेक विषयों के पुस्तकों को आत्मसात् किया। स्नातक की परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने महाविद्यालय की ख्याति बढ़ाई। उनका नाम सभी जगह गूंजने लगा।

45. रामप्रवेश राम किससे प्रभावित होकर अध्ययन में निरत हो गया?

उत्तर- रामप्रवेश राम शिक्षक और उनके शिक्षा शैली से प्रभावित होकर अध्ययन में निरत हो गया।

46. 'कर्मवीर कथा' से क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 'कर्मवीर कथा' एक पुरुषार्थी की कथा है जो निर्धनता एवं दलित जाति में जन्म जैसे विपरीत परिवेश में रहकर प्रबल इच्छा शक्ति तथा उन्नति की उत्कट कामना के कारण उच्चपद पर पहुँचता है। अत: इस कथा से यह शिक्षा मिलती है कि यदि व्यक्ति में प्रबल इच्छाशक्ति एवं उन्नति करने की उत्कट कामना हो तो विपरीत परिस्थिति में भी उच्च से उच्च पद को प्राप्त कर सकता है। यह कथा बच्चों में आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान उत्पन्न करने वाली है।

47. कर्मवीर कौन था एवं उसके जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर कर्मवीर रामप्रवेश राम था। जिसका जन्म दलित परिवार में हुआ था। विपरीत परिवेश में रहकर प्रबल इच्छा-शक्ति एवं उन्नति की उत्कट कामना के कारण उच्चपद पर पहुँचता है। रामप्रवेश ने उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है। उसके जीवन से हमें शिक्षा मिलती है कि मनुष्य के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।

48.नीतिश्लोका: पाठ के आधार पर पण्डित के कौन-कौन से गुण हैं? अथवा, पण्डित किसे कहा जाता है?

उत्तर–नीतिश्लोका: पाठ में पण्डित के गुण इस प्रकार हैं– (i) जिसका कार्य, शीत, उष्ण, भय, रति, समृद्धि अथवा असमृद्धि विघ्न नहीं होता, वह व्यक्ति पंडित है। (ii) सभी जीवों का तत्वज्ञ, कर्मों का योगज्ञ एवं सभी मानवों का उपाज्ञय व्यक्ति पण्डित कहलाता है।

49. दान क्रिसको देना चाहिए?

उत्तर-बदले बदले में कुछ पाने की ओशों लेकर किसी को दान स्थान तथा समय का विचार कर उचित पात्र को ही दान देना चाहिए। ऐसा दान सात्विक दान होता है

50. सोने के कंगन को देखकर पथिक ने क्या सोचा?

उत्तर- सोने के कंगन को देखकर पथिक ने सोचा कि भाग्य से ही ऐसा मिलता है। किन्तु यहाँ आत्मसंदेह है और आत्मसंदेह की स्थिति में कार्य नहीं करना चाहिए। अनिष्ट से इष्ट की प्राप्ति करने वाले लोगों की अच्छी गति नहीं होती है। विषयुक्त अमृत पीने से भी मृत्यु प्राप्त होती है। लेकिन सब जगह धनार्जन कार्य में संदेह ही रहता है। इसलिए जाँच कर लेना चाहिए।

51. बाघ ने स्वयं को अहिंसक सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिया?

उत्तर- बाघ ने स्वयं को अहिंसक सिद्ध करने के लिए अनेकों तर्क दिया। अनेकों गायों और मनुष्यों के वध करने से मेरे पुत्र और पत्नी की मृत्यु हो गई। मेरे नख और दन्त गल गए हैं। मैंने शास्त्रों में पढ़ा है कि दान उसे देना चाहिए, जिससे उस दान के बदले उपकार नहीं कराया जाय। स्थान, समय और योग्य व्यक्ति को दिया गया दान सात्विक दान कहा गया है

52. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ के आधार पर इन्द्र की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर-महाभारत में कौरवों और पांडवों के बीच सत्यासत्य की लड़ाई हुई जो अठारह दिनों तक चली। देव सत्य के पक्षधर होते हैं क्योंकि उनमें सत् का प्राबल्य होता है। इंद्र को देवराज भी कहा जाता है। सत्य के पक्षधर पांडवों की सहायता करने के लिए इंद्र ब्राह्मण का वेश धारण कर दानवीर कर्ण के पास जाते हैं और उसके अमर होने के हेतु कवच और कुंडल की माँग पूर्ति चाहते हैं। कर्ण की दानवीरता जगत् प्रसिद्ध थी। वह समझ गया कि कपटी कृष्ण की मंत्रणा पर ही ब्राह्मण ऐसी माँग कर रहे हैं। दिया हुआ दान सदा अमर होता है- यही सोचकर कर्ण स्वयं ही अपने कवच और कुंडलों को काटकर इंद्र को दे देता है।

53. कर्ण के कवच-कुण्डल की क्या विशेषता थी?

उत्तर-कर्ण के कवच और कुण्डल की विशेषता थी कि जब तक वह कर्ण के शरीर पर रहेगा तब तक देवता और दानवों के द्वारा भेदा नहीं जा सकता है।

54. शक्र ने कर्ण से कौन-सी बड़ी भिक्षा माँगी तथा क्यों?

उत्तर-शक्र ने कर्ण से उसके शरीर से जुड़ा हुआ कवच-कुण्डल जो उसका रक्षक है, भिक्षा के रूप में माँगी। कर्ण के शरीर पर जब तक कवच और कुण्डल है तब कोई भी उसको मारने में समर्थ नहीं था। अत: अर्जुन की सहायता के लिए शक्र ने छलपूर्वक कवच और कुण्डल माँगा।

55.नीतिश्लोका: पाठ के आधार पर मूर्ख का लक्षण लिखें।

उत्तर– नीतिश्लोक के अनुसार जो बिना बुलाये प्रवेश करता है, बिना पूछे बहुत बोलता है। अविश्वसनीय व्यक्ति पर विश्वास करता है। वह मूर्ख हृदय वाला ही नराधम (अधम नर) व्यक्ति कहा जाता है।

56. मध्यकाल में भारतीय समाज क्यों दूषित हो गया था?
अथवा, मध्यकाल में भारतीय समाज में वर्तमान कुरीतियों पर प्रकाश डालें।

उत्तर-भारतीय इतिहास के मध्यकाल में अनेक कुरीतियाँ वर्त्तमान थी। इनमें जातिगत विषमता, अस्पृश्यता, धर्मकार्यों में आडम्बर स्त्रियों की अशिक्षा, विधवाओं की दुर्दशा तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार न होने से भारतीय समाज दूषित हो गया था।

57. शिवरात्रि महापर्व स्वामी दयानन्द के लिए उद्बोधक हुआ

उत्तर-शिवरात्रि महापर्व पर स्वामी दयानन्द ने देखा कि प्रतिमा पर चढ़े प्रसाद चूहा खा रहा है। मूर्ति कुछ नहीं कर रहा है। उसी समय से मूर्तिपूजा के विरोधी हो गए। मूलशंकर में विरक्ति आ गई। विद्वानों, संतों और सज्जनों की संगति के बीच घूमते हुए मथुरा में विरजानन्द के समीप गए। यही कारण उनके लिए उद्बोधक हुआ

58. स्वामी दयानन्द ने अपने सिद्धांतों के कार्यान्वयन हेतु क्या किया?

उत्तर - स्वामी दयानन्द ने अपने सिद्धांतों के संकलन के लिए सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ राष्ट्रभाषा में रचकर अपने अनुयायियों का उपकार किया। वेदों के प्रति सभी धर्मानुयायियों का ध्यानाकर्षण करते हुए स्वयं वेद भाष्यों को संस्कृत - हिन्दी भाषा में लिखा। प्राचीन शिक्षा में दोष दिखाकर नई शिक्षा पद्धति देने हेतु DAV विद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा की गंदगी को दूर किया। इस प्रकार इन्होंने समाज के प्रवर्तन में विशेष भूमिका निभाई।

59. स्वामी दयानन्द समाज सुधारक थे, कैसे? पाँच वाक्यों में उत्तर दें।

उत्तर–स्वामी दयानन्द ने समाज की कुरीतियों को दूर कर सुधारात्मक कार्य किया। इन्होंने जातिवाद की विषमताओं को हटाया। छूआछूत की परम्परा को दूर किया। स्त्रियों की हो रही दुर्दशा को टोका। स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा दिया और विधवा- स्थिति सुधारी।

60. स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा के विरोधी कैसे बने? अथवा, महाशिवरात्रि पर्व स्वामी दयानन्द के जीवन का उद्बोधक कैसे बना?

उत्तर–स्वामी दयानन्द के घर शिवरात्रि महोत्सव था। रात्रि में उन्होंने मूर्ति पर चूहों को टहलते देखा। उसी दिन से उनके मूर्ति पूजन के प्रति विरक्ति हो गई।

61.कर्णस्य दानवीरता पाठ का पाँच वाक्यों में परिचय दें। अथवा, कर्ण की दानवीरता या चरित्र का वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर - यह पाठ संस्कृत के प्रथम नाटककार भास द्वारा रचित कर्णभार नामक एकांकी रूपक से संकलित है। इसमें महाभारत के प्रसिद्ध पात्र कर्ण की दानवीरता दिखाई गयी है। इन्द्र कर्ण से छलपूर्वक उनके रक्षक कवचकुण्डल को मांग लेते हैं और कर्ण उन्हें दे देता है। कर्ण बिहार के अङ्गराज्य (मुंगेर तथा भागलपुर) का शासक था। इसमें संदेश है कि दान करते हुए मांगने वाले की पृष्ठभूमि जान लेनी चाहिए, अन्यथा परोपकार विनाशक भी हो जाता है।

62. 'व्याघ्रपथिक कथा' के आधार पर बताएँ कि दान किसको देना चाहिए?

उत्तर–शास्त्रों के अनुसार दान देने का विधान है, परन्तु जिस किसी को बिना सोच-विचार कर दिया गया दान सफल नहीं होता है। अत: व्याघ्रपथिक कथा के आधार पर देश काल के अनुसार बिना उपकार के, योग्य पात्र को दिया गया दान सात्विक कहा गया है।

63. 'ज्ञानं भार: क्रियां बिना यह उक्ति व्याघ्र पथिक कथा पर कैसे चरितार्थ होती है?

उत्तर–जब बाघ के द्वारा पथिक पकड़ लिया गया तब वह सोचने लगा कि जिसकी इन्द्रियाँ वश में नहीं होती उसकी क्रिया हाथी के स्नान की तरह निरर्थक होती है। दुर्भाग्यशाली लोगों का ज्ञान प्राय: क्रिया के बिना भार स्वरूप हो जाता है।

64. विश्व अशान्ति का क्या कारण है? तीन वाक्यों में उत्तर दें।

उत्तर–विश्व अशान्ति के प्रमुख दो कारण-द्वेष और असहिष्णुता है। तदनन्तर जातिवाद, धर्मवाद उक्त दो कारणों से पनपे हुए अन्य कारण माने जा सकते हैं। अशान्ति प्रसारित करने में स्वार्थपरक राजनीतिज्ञों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।।

65. 'कर्णस्य दानवीरता' पाठ के आधार पर इन्द्र के चरित्र की विशेषताओं को लिखें।

उत्तर - कर्ण ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र को विनम्रतापूर्वक सर्वप्रथम भौतिक वस्तुएँ प्रदान करना चाहते थे यथा– गौ, हाथी, घोड़े, पृथ्वी। यहाँ तक कि अपने अग्निष्टोम फल भी देना चाहते हैं और अन्ततः अपना सिर तक अर्पित करने के लिए उद्यत हो उठते हैं। परन्तु ब्राह्मणवेशधारी शक्र (इन्द्र) तो दृढ़ संकल्पित कुछ अन्य वस्तु के प्रति थे । कर्ण उनके मनोदशा को समझकर अपने वचन रक्षार्थ शरीर से जुड़े कवच-कुण्डल को दान दे देते हैं। इतना बड़ा दान कर्ण को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दानवीर सिद्ध करता है।

66. गुरु के द्वारा शास्त्र का क्या लक्ष्य बतलाया गया है?

उत्तर' शास्त्रकाराः' पाठ के अनुसार शास्त्र ज्ञान का शासक है। मानवों के लिए क्या करना उचित है अथवा अनुचित- इसका बोध ज्ञान के द्वारा ही हो सकता है जो शास्त्र का लक्ष्य है। ज्ञान प्राप्ति के निवृत्ति और प्रवृत्ति दो मार्ग हैं जिनसे मानव ज्ञान पाता है तथा स्वयं को अनुशासित कर अपने जीवन के लक्ष्यों को साध पाता है।

67. 'शंकरचरितम्' काव्य की विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर- 'शंकरचरितम्' काव्य की रचनाकार पण्डिता क्षमाराव हैं। उन्होंने अपने पिता पंडित शंकर पांडुरंग की विद्वता एवं जीवन चरित की रचना की।

68. कौन-कौन दक्षिणभारतीय संस्कृत लेखिकाएँ अपने स्फुट पद्यों के लिए प्रसिद्ध हैं?

उत्तर - शीलाभट्टारिका, देवकुमारिका, रामभद्राम्बा आदि दक्षिण भारतीय लेखिका अपने स्फुट पद्यों के लिए प्रसिद्ध है।

69. आधुनिक काल की किन्हीं तीन संस्कृत लेखिकाओं के नाम लिखें।

उत्तर-आधुनिक काल की तीन लेखिकाओं में पण्डित क्षमाराव, वनमाला भवालकर और मिथिलेश कुमारी मिश्र का नाम प्रमुख है।

70.वेदाङ्ग कितने हैं? उनके प्रवर्तकों एवं शास्त्रों के नाम लिखें। अथवा, वैज्ञानिक शास्त्रों का परिचय दें।

उत्तर - वेदांग छः हैं–शिक्षा, कल्प, व्यावरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष । सांख्य के प्रवर्तक कपिल, योग दर्शन के पंतजलि, न्याय दर्शन के गौतम, वैशेषिक दर्शन के कणाद, मीमांसा दर्शन के जैमिनि एवं वेदांत दर्शन के प्रवर्तक बादरायण हैं।

71. आज कौन-कौन से आविष्कार विध्वंसक हैं?

उत्तर- मानव सभ्यता का क्षणमात्र में विनाश करने वाले शस्त्रों में अणु बम, परमाणु बम, जैविक हथियार (कोरोना वायरस) तथा अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्रों की अनवरतश्रृंखला आज उपलब्ध है। इनका प्रयोग कर मानव स्वयं भी नहीं बच पाएगा फिर भी आत्मघाती उपकरणों के निरंतर विकास में लुगा हुआ है।

72. असहिष्णुता का कारण-निवारण बताएँ।

उत्तर-द्वेष और असहिष्णुता विश्वशांति के शत्रु हैं। असहिष्णुता का कारण स्वार्थ सिद्धि करना है। यदि इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण हो जाए चाहे इसके लिए बल प्रयोग ही क्यों न करना पड़े तो स्थिति में सुधार हो सकता है। साथ ही परोपकार करने की प्रवृत्ति पर ध्यान दिया जाए और इसे बढ़ाया जाए तो लोगों में त्याग की भावना बलवती होगी और परस्पर सहनशीलता का गुण आपस में सौहार्द्र को बढ़ाएगा तथा विश्वशांति का सूर्य चमक सकेगा।

73. कौन पूरी पृथ्वी को एक परिवार समझते हैं?

उत्तर- यह अपना और वह पराया की भावना छोटी बुद्धि वाले की होती है। जो व्यक्ति सभी प्राणियों को समान भाव से देखते हैं। अर्थात् किसी प्राणी में भेदभाव नहीं रखते हैं वैसे व्यक्ति संसार के सभी प्राणियों के साथ अपनापन का व्यवहार करते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए पूरा संसार ही अपना परिवार होता है।

74. 'विश्वशांति' पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर- विश्वशान्ति पाठ का उद्देश्य विश्व में व्याप्त द्वेष एवं अशान्ति के कारणों को स्पष्ट कर शान्ति, प्रेम, सद्भाव और विश्वबन्धुत्व की स्थापना है। आज संसार का प्राय: देश स्वार्थ, द्वेष और असहिष्णुता से ग्रसित है। एक राष्ट्र दूसरे की प्रगति से द्वेष करता है, उसे अस्थिर और कमजोर करना चाहता है। यह विश्व प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। यही कारण है कि एक देश दूसरों से वैर करते हैं। इसे दूर करना होगा। यह दूर तभी होगा जब आपस में प्रेम, सहिष्णुता और विश्वबन्धुत्व की भावना का संचार होगा।

अपठित गद्यांश

Q.. हिमालयः

भारतस्य उत्तरदिशायां स्थितः अस्ति। अस्य शिखराणि सर्ववर्षम् हिमेन आच्छादितानी सन्ति । अतएव तु अय हिमस्य आलयः इति हिमालयः कथ्यते। ग्रीष्मस्य तापेन जनाः प्रतिवर्ष ग्रीष्मे तत्र गच्छन्ति। अनेके रूग्णाः जनाः अपि तस्य पवित्रे वातावरणे स्वस्थाः भवन्ति। अत्र अनेकानि दर्शनीयानि स्थानानि सन्ति। प्रतिवर्ष भक्ताः अत्र आगच्छन्ति। हिमालयः प्रहरी इव भारतं रक्षति। अस्य रक्षेण एव भारतस्य रक्षणम्।

प्रश्नाः-I. एकपदेन उत्तरत-

(क) भारतस्य उत्तरदिशायां कः अस्ति?

(ख) अस्य रक्षणे कस्य रक्षणम् ?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत-

(क) हिमालयः कुत्र स्थितः अस्ति? (ख) भक्ताः मन्दिरेषु कस्य दर्शनं कुर्वन्ति?

III. अस्य गद्यांशस्य एकं समुचितं शीर्षकं लिखत ।

उत्तराणि-I. (क) हिमालयः

(ख) भारतस्य

II.(क) हिमालयः भारतस्य उत्तरदिशाया स्थितः अस्ति।

(ख) भक्ताः मंदिरषु ईश्वरस्य दर्शनं कुर्वन्ति।

III. शीर्षकं-हिमालयः

Q. अपने परिवार के साथ की गयी यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र को संस्कृत में पत्र लिखें।

प्रिय मित्र श्यामः !

भागलपुरतः तिथि-19/02/2026

अहम् ह्य मित्रेण सह गोलगृहम् द्रष्टुम् पाटलिपुत्र-नगरम् गतवान्। गोलगृहम् आरूह्य समस्त पाटलिपुत्रम् अपश्यम्। गोलगृहं गंगा तटे अस्ति। गोलगृहं द्रष्टुं प्रतिदिनम् विभिन्नेभ्यः स्थानेभ्यः जनाः प्रतिदिनम् अपि च जन्तुशालाडपि अस्माभिः दृष्टा।

अग्रे पुनः लेखिष्यामि। सर्वेभ्यः नमस्कारः कथनीयः।

भवदीयः

सुशीलः

Q.. आपका मित्र प्रथम श्रेणी से प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण हुआ है। उसके लिए संस्कृत में एक बधाई पत्र लिखें।

उत्तर-

भाग्यनगरतः

प्रिय मित्र प्रकाशः

तिथि : 19-02-2026

सस्नेहं नमः।

अत्र कुशलं तत्रापि अस्तु। अत्र समाचार पत्रे प्रवेशिका परीक्षायाः परीक्षाफलं प्रकाशितम् जातम्। तत्र भवद् अनुक्रमांकं प्रथमश्रेण्याम् आलोक्य मे अन्तरंगम्।

भाग्यनगरस्य सहपाठिनः साधुवादान् वितरन्ति शतशः। अन्यत् सर्वं शोभनम् एव अवगन्तव्यम्। कदा आगन्ता इति संसूचनीयोऽहम्।

भवतः मित्रं सुकेशः

Q. अपने बड़े भाई के विवाह समारोह में सम्मिलित होने के लिए मित्र को एक निमन्त्रण पत्र संस्कृत में लिखें।

उत्तर-

प्रियमित्र मोहनः

सादर नमस्कारः

परीक्षाभवनात्

RK EXPERT CLASSES (Sanskrit) Subjective Question

तिथि: 23-02-2026

अहं कुशली अस्मि। आशामे यत् भवान् अपि कुशली भविष्यति। सहर्ष सूचयामि यत् अप्रैलमासस्य विंशति तारिकायां मम अग्रज भ्राता विवाहोत्सव: कार्यक्रम: अस्ति। तस्मिन् कार्यक्रमे भवताम् उपस्थिति: उपेक्षिता अस्ति। कार्यक्रमे भवन्त: सपरिवारा: समागत्य कार्यक्रमस्य

सफलतां परिवर्द्धयन्तु इति मेऽभिलाष: । भवतां प्रतीक्षायां मम परिवारा: सन्ति:।

भवत:

मित्रवर: प्रकाश:

Q. विद्यालय परित्याग प्रमाण-पत्र निर्गत करने हेतु प्रधानाध्यापक को संस्कृत में आवेदन पत्र लिखें।

- सेवायाम्

श्रीमन्त: प्रधानाचार्य: महोदय:

एस० के० एम० +2 विद्यालय मोकामा। विषय-विद्यालय परित्याग प्रमाणपत्रार्थम्।

महाशय:

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहं भवतः विद्यालयस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः अस्मि। सम्प्रति जनकस्य स्थानान्तरणं पाटलिपुत्रनगरे संजातम्। अधुना अस्माकं परिवारं तत्रैव वहस्यति। एतदर्थम् विद्यालयस्य परित्यागप्रमाणपत्रम् आवश्यकम् अस्ति। अतः श्रीमन्तः माम् परित्यागपत्रं प्रदाय अनुगृहणन्तु।

धन्यवादाः

भवदीयः शिष्यः

मनोजः

दशम 'ब'

अनुक्रमांक-विंशति

Q. प्रधानाचार्य को शुल्क क्षमा के लिए संस्कृत में एक आवेदन पत्र लिखें।

उत्तर- सेवायाम्

श्रीमान् प्रधानाध्यापक महोदयः

आर० एस० एम० +2 विद्यालय मोकामा

विषयः-शिक्षा-शुल्क-क्षमार्थम् प्रार्थनापत्रम्।

महाशयः,

सविनयं निवेदनं यत् मम पितृमहाभागानाम वेतनं केवलम् अस्ति। सः हि एकस्मिन् कार्यालये कार्यं करोति । तत्र मासिकवेतनरूपेण केवलं सार्ध-सहस्र-रुप्यकाणि प्रदीयन्ते। अल्पेन वेतनेन परिवारस्य भरणपोषणम् येन-केन-प्रकारेण भवति।

अतः अहं शिक्षा-शुल्कदाने असमर्थः अस्मि । अतः प्रार्थये यत् मम् शिक्षाशुल्कं क्षन्तव्यम् भवेत्।

भवताम् शिष्यः

रविशंकरः

दशवीं कक्षा

क्रमांक

अनुच्छेद लेखन

Q. प्रियकविः

अस्माकं प्रियः कविः तुलसीदासः अस्ति। स हि रामचरितमानसस्य प्रणेता अस्मिन् पुस्तके रामस्य उदात्तं चरितं उल्लिखितम् अस्ति। नानापुराण निगमागसम्मतं स्वकीयं विचारं च अस्मिन् पुस्तके भाषाबद्धम् कृतम्। इदम् प्रबन्धमहाकाव्यं अल्पज्ञानां बहुज्ञानां च कृते अनुशीलनीयम् अस्ति। अत्र रामः सवृत्तेः। रावणः च दुवृत्तेः प्रतीकः अस्ति। अयं हि महाग्रंथः लोकोपकारः कलिकल्मष हन्ता च अस्ति।

Q. परोपकारः

परेषां उपकारः परोपकारः भवति। परोपकारं विना मानवः पशुः इव भवति। इयं प्रकृतिः अपि अस्मान् परोपकारं शिक्षयति । वृक्षाः परोपकाराय एव फलन्ति। नद्यः अपि परोपकाराय वहन्ति। प्रकृतेः प्रत्येकं वस्तु परेषाम् कल्याणाय एव भवति। अतः सर्वैः मानवैः सदा परोपकारः करणीयः। सर्वेषु जीवेषु दया, परेषां हितं, दीनानां पोषणं दुर्बलानां च रक्षणम् इत्याद्योऽपि परोपकारस्य एव लक्षणानि सन्ति। अतः स्वार्थत्यागं कृत्वा अन्येजां कल्याणाय चिन्तनं सज्जनानां स्वभावः भवति। अतएव उच्यते 'परोपकाराय सतां विभूतयः।'

Q. गंगानदी

अस्माकं देशे सर्वासु नदीषु गंगा अतिश्रेष्ठा प्रधाना प्रवित्रतमा च वर्तते। इयम् हिमालयात् निःसृत्य बंगोप-सागरे पतति । अस्याः पावने तटे बहवः विशालाः प्राचीनाः नगर्यः स्थिताः सन्ति। यथा-हरिद्वारः, प्रयागः, वाराणसी, पाटलिपुत्रादि। अस्माकं सभ्यता संस्कृति एषु नगरेषु उन्नता जाता। गंगा एवं भारतवर्षस्य धार्मिक विचारधारायाः परिचायिका अस्ति। चिरकाल रक्षितेऽपि गंगाजले

कीटाणु न प्रभवन्ति। अतएव गंगानदी नित्या पूजनीया, वन्दनीया, सेवनीया च। गंगास्मरणमात्रेण पाप: शिर: धुनोति इति कथ्यते।

Q. वाल्मीकि:

महर्षि वाल्मीकि: रामायणस्य रचयिता अस्ति। अयमेव सर्वप्रथमं काव्यस्य रचनाम् अकरोत्। अत: महर्षि वाल्मीकि: आदिकवि इति नाम्ना अपि विख्यात: अस्ति। अस्य रामायणं काव्यम् आदिकाव्यम् मन्यते। किम्वदन्ती अस्ति यत् अयं पूर्वं चौर: आसीत्। सप्तर्षिणां संगात अयं तपस्यां कृत्वा महाकवि: अभवत्। अस्य आश्रम: तमसा नदया: तीरे आसीत्। अयं महर्षि भगवत: श्रीरामस्य समकालिक: आसीत्। भगवत: ब्राह्मण: आदेशेन अयं रामस्य चरित्रं निबद्धवान्। अयम एक: महान् कवि:, चिन्तक:, दार्शनिक:, विद्वान् च आसीत्। अस्यैव आश्रमे लव-कुशयो: जन्म अभवत् । तौ अस्यैव शिष्यौ आस्ताम्।

Q. वर्षा ऋतु:

वर्षाऋतु: कृषिकार्यस्य कृते परमावश्यक: अस्ति। अस्मिन् काले पृथिव्यां हरितानि तृणानि सर्वत्र दृश्यन्ते, शस्य क्षेत्राणि अपि

शोभन्ते। नद-नद्यः च परिपूर्णाः भवन्ति। कृषि कार्यम् अस्योपरि निर्भरम् अस्ति। आकाशे जलपूर्णाः मेघाः इतस्ततः दृश्यन्ते । जलपूर्ण आकाशं दृष्ट्वा मयूराः नृत्यन्ति। वर्षाकालः विशेषतः कृषकेभ्यः अतीव रोचते । अयं ऋतुः रोमाञ्चक भवति।

Q. हिमालयः

हिमालयः सम्पूर्ण भूभागे पर्वतानां राजा। अयं संसारे ये पर्वताः तेषु सर्वेषु उच्चः, प्राचीनः श्रेष्ठः च अस्तिः। अयं पर्वतः सृष्टेः आदिकालात् एव अस्माकं शास्त्रीय ग्रन्थेषु पुराणेतिहास पुस्तकेषु च प्रसिद्धः । अस्य महिमानं कवयो, शास्त्रकाराः ऋषयः मुनयः च गायन्ति। अयं भारतस्य उत्तरस्यां पूर्वापरसमुद्रपर्यन्तं विस्तृतः अस्ति। अस्य क्रोडे भारतस्य अनेके भूभागाः सन्ति । अस्मिन्नेव औषधीनां प्रचुर परिमाणं प्राप्यते । अत्र गृहनिर्मानार्थं काष्ठानि, मिलन्ति, नद्यः निर्गच्छन्ति। हिमालयः अस्माकं रक्षकः पुराणपुरुषः, संकटकाले शक्ति संचारकः च अस्ति।

Q. आदर्शग्रामः (अस्माकम् ग्रामः)

मम ग्रामस्य नाम चिरंजीविपुरम् इति अस्ति। अयं ग्रामः कृषि प्रधान ग्रामः वर्त्तते परन्तु अत्र आवागमनस्य समुचितं सौविध्यं वर्त्तते रेलमार्गस्य सड़कमार्गस्य च। विद्युत् व्यवस्थापि समुचिता विद्यते ग्रामोऽयं निर्मल ग्राम योजनया सम्बद्धः अस्ति। अत्र ग्रामे स्वास्थ्य उपकेन्द्रम्, पंचायत सरकार भवनं, बालविकास शिक्षा परियोजना केन्द्रम्, कृषि सलाह केन्द्रञ्च वर्त्तन्ते। अत्र प्राथमिक मध्य-माध्यमिकाः विद्यालयाः संचालिताः सन्ति यत्र ग्रामस्य छात्रछात्राः शिक्षां गृह्णन्ति । सुशिक्षिताः ग्रामवासिनः परस्परं मैत्री भावेन निवसन्ति यदाकदा याकाचित् पारस्परिक आपात् समस्याः समापतन्ति तासां समाधानं ग्रामे एव जायन्ते। अयं ग्रामः आदर्श ग्राम रूपेण विकसितः वर्त्तते

Q. सरस्वतीपूजा

विद्यायाः अधिष्ठात्री देवी वर्त्तते सरस्वती। अस्याः विशेष पूजा माघमासस्य शुक्ल पञ्चम्यां तिथौ प्रतिवर्ष आयोज्यते एतदेव सरस्वती पूजेतिनाम्ना प्रसिद्धा अस्ति। विद्याभिलाषिभिः छात्रैः श्रद्धया भक्तिभावेन च सरस्वत्याः पूजां कुर्वन्ति। सरस्वत्याः वाहनं हंसः अस्ति। 'वीणापुस्तकधारिणी' अपि सरस्वत्याः अपरं नाम।

कमला. सिनी श्वेतवसनेयं याचकेभ्यः सदा मुक्तहस्तैः विद्यां ददाति । सरस्वत्याः पूजा प्रति महाविद्यालये, विद्यालये, पुस्तकालये च भवति ।

Q. दीपोत्सव

सर्वेषु पर्वसु दीपावली अतिलोकप्रिया वर्त्तते। ज्योतिर्मयी इयं दीपावली प्रतिवर्ष कात्त्रिक मासस्य अमावस्यायां महत्ता हर्षेण सम्पद्यते। अत्रावसरे सर्वे जनाः स्वगृहाणि स्वच्छीकुर्वन्ति। रात्रौ प्रतिगृहं प्रतिद्वारं सज्जिताः दीपानां पंक्त्यः सर्वत्र प्रकाशन्ते। जनाः लक्ष्मीगणेशयोः पूजां कुर्वन्ति प्रसादरूपेण मोदकानि च खाद्यन्ते। दीपावली अस्माकं सामाजिक-जीवने समृद्धः संदेशम् आमोदं च वितरति । पर्व इदं दीपावली, दीपोत्सवः दीपमालिका चेति नाम्ना अपि ज्ञायते।

Q. भारतवर्ष

अस्माकं देश: भारतम् अस्ति। अयं महान् देश: अस्ति। अस्य प्राचीनं नाम आर्यावर्त: आसीत्। दुष्यन्त-पुत्रस्य भरतस्य नाम्ना अस्य नाम भारतम् अभूत्। अधुना अस्माकं देशे अनेकभाषा-भाषिण: नाना धर्मावलम्बिन: च जना: निवसन्ति। अस्य भौगोलिकी स्थिति: अतीव मनोहरा अस्ति। अस्य उत्तरदिशायां पर्वतराज: हिमालय: अस्य मुकुटमिव शोभते। दक्षिण दिशि हिन्दमहासागर: अस्य चरणौ प्रक्षालयति। अस्य देशस्य सभ्यता संस्कृतिश्च अतीव प्राचीने स्त:। अस्माकं देश: शान्तिप्रेमी अस्ति।

Q. संस्कृतभाषाया: महत्त्वम्

संस्कृतभाषाया: विश्वस्य सर्वोसु भाषासु प्राचीनतमा भाषा अस्ति। चत्वारो वेदा: अस्याम् भाषायां रचिता:। संस्कृतभाषायां जीवनस्य सर्वसंस्कारेषु संस्कृतस्य प्रयोग: भवित। संस्कृतभाषा सर्वेषां जनानां आर्याणां सुलभा शोभना गरिमामयी च अस्ति । अतएव उच्यते-संस्कृति: संस्कृताश्रिता। संगणकस्य कृते संस्कृतभाषा अति उपयुक्ता अस्ति। भारतीय गौरवरक्षणे समर्था इयं भाषा सर्वदा रक्षणीया।

Q. पाटलिपुत्रम

'पाटलिपुत्रम्' अति प्राचीननगरम् 'पटना इति नाम्ना प्रसिद्ध सम्प्रति। गंगाया: तटे अवस्थितं वत्तते इदं नगरम्। बिहार राज्यस्य राजधानीनगरमस्ति पटना। अत्र गोलगृहं, संग्रहालय:, जैविकोद्यानं, गुरु गोविन्द सिंह जन्मस्थानं, सचिवालय भवनं, राज्यपाल भवनं, शहीद स्मारक: चेति दर्शनीयानि वर्त्तन्ते। अत्रैव गंगातटे पटना विश्वविद्यालय: वर्त्तते। य: विश्वविख्यात: अस्ति। महात्मा गाँधी सेतु: अपि अत्रैव अस्ति य: विश्वस्य सेवा दितीय स्थानीय: विद्यते। पटनाया: इतिहास: अति गौरवशाली वर्त्तते

अनुवाद

Q(क) संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है।

(ख) वह गीता के साथ पढ़ने के लिए जायेगी।

(ग) हमेशा लोकहित सोचना चाहिए।

(घ) मैं सूर्य उगने पर जाऊँगा।

(ङ) हम सब प्रात: भ्रमण करते हैं।

(च) मुझे मिठाई पसंद है।

(छ) डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

(ज) श्रीगणेश को नमस्कार है।

(झ) नदियों में गङ्गा सबसे पवित्र है।

(ञ) गङ्गा हिमालय से निकलती है।

(ट) राम चार भाई थे।

(ठ) राम की पत्नी सीता थी।

उत्तर-

(क) संस्कृतभाषा सर्वासु भाषाणां जननी अस्ति।

(ख) सा गीतया सह पठितुम् गमिष्यति।

(ग) सदा लोकहितं चिन्तनीयम्।

(घ) अहं सूर्ये उदिते गमिष्यामि।

(ङ) वयं प्रातः भ्रमामः।

(च) महह्यम् मिष्ठानं रोचते।

(छ) डॉ० राजेन्द्र प्रसादः भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः आसीत्।

(ज) श्री गणेशायः नमः।

(झ) नदीषु गंगा पवित्रतमां अस्ति।

(ञ) गंगा हिमालयात् प्रभवति।

(ट) रामः चत्वारः भ्रातः आसन्।

(ठ) रामस्य भार्या सीता आसीत्।